गाँधीजी और ईश्वर

गाँधीजी बहुत बड़े ईश्वर भक्त थे। वे सम्पूर्ण जगत को ईश्वरमय मानते थे। उनके शब्दों में "मैं यह दृढ़तापूर्वक कह सकता हूँ कि बिना जल और बिना वायु के जीवित रह सकता हूँ, परन्तु ईश्वर के बिना नहीं। तुम मेरी आँख निकाल सकते हो परन्तु मैं नहीं मरूँगा परन्तु ईश्वर से मेरा विश्वास हटा दीजिए, मैं जीवित नहीं रहूँगा।" गाँधीजी के अनुसार ईश्वर सत्य है। इसलिए उसकी प्राप्ति जीवन का परम ध्येय है। परन्तु धर्म धर्म की भाँति उनकी ईश्वर की व्याख्या भी उदार है। ईश्वर प्रकाश तथा जीवन का स्रोत है। ईश्वर अन्तःकरण है। वह नास्तिक की नास्तिकता भी है.... वह शुद्धतम मूल तत्व है वह केवल उनके लिए है जो विश्वास रखते है।

गाँधीजी का यह कथन है कि "यदि मैं यह विश्वास कर पाता कि ईश्वर मुझे हिमालय की गुफा में मिलेगा तो मैं तुरंत वहाँ पहुँचता पर मैं यह जानता हूँ कि मैं उसे मानवता से पृथक नहीं पा सकता" उनकी ईश्वर धारणा को सर्वव्यापक बनाते है। गाँधी जी ने ईश्वर शब्द का अर्थ विस्तार किया था और उसे दरिद्रनारायण कहकर भी पुकारा था जिसका आशय है गरीबों का ईश्वर।

गाँधी जी की कार्यपद्धति

गाँधी जी ने अहिंसा के सिद्धांत को मूर्त रूप देने के लिए राजनीतिक क्षेत्र में जिस कार्यपद्धति का प्रयोग किया वह सत्याग्रह है। इसके नाम का विकास दक्षिण अफ्रीका में किया गया। वहाँ की गोरी सरकार भारतीयों के प्रति अन्यायपूर्ण कानून पास कर रही थी। इनसे वहाँ बसे भारतीयों में बहुत असंतोष था। उन्होंने गाँधी जी के नेतृत्व में इस अन्याय का अहिंसात्मक प्रतिरोध करने का ~~निश्चय~~ निश्चय किया। उस समय इस आन्दोलन को 'निष्क्रीय प्रतिरोध' का नाम दिया गया। किन्तु गाँधीजी को दो कारणों से यह शब्द पसंद नहीं था। पहला कारण तो इसका अंग्रेजी शब्द होना था तथा भारतीयों को इसका पूरा अर्थ समझ में न आना था। दूसरा कारण यह कि इसमें गाँधीजी द्वारा प्रतिपादित विचारों का पूरा समावेश नहीं होता था। सत्याग्रह का शाब्दिक अर्थ है सत्य के लिए आग्रह करना। इसका आधार है सत्य से उत्पन्न होनेवाले प्रेम तथा अहिंसा की शक्ति। यह आत्मा की शक्ति है। सत्याग्रह का संचालन आत्मिक शक्ति के आधार पर किया जाता है।